प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

वन्यजीव स्वास्थ्य प्रबंधन एवं संरक्षण पर दो-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

पंतनगर। 29 सितम्बर, 2018। पंतनगर विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय और ऐसोसिएशन ऑफ जू एण्ड वाइल्ड लाइफ वैटेनेरियन्स, के संयुक्त तत्वाधान में आज वन्यजीव स्वास्थ्य प्रबंधन एवं संरक्षण पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन रतन सिंह सभागार में किया गया। इस कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के पूर्व उप महानिदेशक (पशु विज्ञान), डा. एम.एल. मदान, मुख्य अतिथि और क्रार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति, श्री राजीव रौतेला, ने की। इस अवसर पर ऐसोसिएशन ऑफ जू एण्ड वाइल्ड लाइफ वैटनेरियन्स के सचिव, डा. बी.एम. अरोरा और संयुक्त सचिव, डा. एम. हक भी मंचासीन थे।

कुलपति श्री राजीव रौतेला ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि देश में और उत्तराखण्ड राज्य में जंगल बहुतायत में हैं और उत्तराखण्ड के कुमाऊँ क्षेत्र में वन्यजीव व वनस्पति भी बहुतायत में है। उन्होंने कार्बेट नेशनल पार्क का उदाहरण देते हुए बताया कि यह क्षेत्र निश्चित ही वन्यजीवों के संरक्षण के लिए लम्बे समय से काम कर रहा है, जिससे पारिस्थिकी तंत्र का संतुलन बना हुआ है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि वे सिर्फ पढ़ाई और शोध तक सीमित न रहें बल्कि उत्तराखण्ड के क्षेत्रों में घूमकर भी देखें ताकि वे जीवों की जानकारी व समझ प्राप्त कर सके। उन्होंने मनुष्यों व जीवों के बारे में बताते हुए कहा कि जहां मनुष्यों की संख्या बढ़ रही है, वहीं वन्यजीवों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। एक जानवर नहीं जानता है कि उसका क्षेत्र कौन सा है और वह कभी-कभी उन क्षेत्रों में आ जाता है जहां उसे नही जाना चाहिए। ऐसे में सही कारणों को जानकर उचित कदम उठाये जाने चाहिए ताकि वन्यजीवों को सुरक्षित रखा जा सके। उन्होंने विद्य ार्थियों को सलाह दी कि कार्यशाला, संगोष्ठी या अन्य कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले, ताकि विशेषज्ञों के अनुभवों से अपने ज्ञान का विस्तार कर सकें।

डा. एम.एल. मदान ने अपने उद्बोधन में कहा कि जीवों का पारिस्थितिकी तन्त्र को व्यवस्थित करने में बहुत बड़ा योगदान है, और यह तभी संभव है जब वन्यजीव स्वस्थ रहें। वन्यजीवों के स्वस्थ रहने में मनुष्यों का भी एक महत्वपूर्ण योगदान हो जाता है। उन्होंने कहा कि जानवरों के स्वास्थ्य का मतलब उनके लिए उपयुक्त वातावरण, संतुलित आहार, सूक्ष्म और गौड़ संक्रमण मुक्त परिवेश उपलब्ध कराना प्रमुख हो जाता है। साथ ही उन्होंने देश में बढ़ रही जनसंख्या, शहरीकरण, कम होते जंगल और प्राकृतिक आपदा को वन्यजीव की परेशानी को बढ़ाने वाला बताया, जो जैव संरक्षण व जैव विविधता को प्रभावित करेगा। उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वह पशुचिकित्सक बनकर वन्यजीवों के संरक्षण व स्वास्थ्य के प्रति कार्य करें।

ऐसोसिएशन ऑफ जू एण्ड वाइल्ड लाइफ वैटनेरियन्स के डा. बी.एम. अरोरा एवं डा. एम.हक ने ऐसोसिएशन के बारे में बताते हुए कहा कि यह वन्यजीव प्रबंधन की नीति और कल्याण के साथ-साथ देश के विभिन्न राज्यों में रह रहे वन्यजीव और चिडियाघरों के जानवरों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के प्रति कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम की शुरूआत में अधिष्ठाता, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, डा. जी.के. सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के उद्देश्य के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा स्मारिका का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम समन्वयक, डा. जे.एल. सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया इस अवसर पर अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न संस्थानों एवं विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, अधिकारी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

वन्यजीव स्वास्थ्य प्रबंधन एवं संरक्षण पर दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा स्मारिका का विमोचन करते (बीच में) डा. एम.एल. मदान (दायें में) कुलपति, श्री राजीव रौतेला (बायें में) डा. एम.बी. अरोरा एवं एम. हक।